उपसंहार

उपसंहार

"अलका सरावगी की उपन्यास कला का मूल्यांकन" करने के उपरांत जो तथ्य सामने आए हैं, उनका निचोड़ यहाँ सार रूप में प्रस्तुत है -

अलका सरावगी : व्यक्ति एवं वाङ्मय :

अलका सरावगी के व्यक्ति एवं वाङ्मय के अध्ययन के पश्चात् प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि उनका व्यक्तित्व मेधावी, प्रकृति-प्रेमी, प्रतिभाशाली, संवेदनशील, अध्ययनशील, शालीन तथा अहंकाररहित जैसे गुणों से युक्त नजर आता है। सामाजिक दायित्व का वहन करनेवाली अलका जी पर हिंदी तथा अंग्रेजी रचनाकारों की रचनाओं का प्रभाव दिखाई देता है। अलका सरावगी प्रेममयी पत्नी, आदर्श बहू, आदर्श माता के साथ-साथ पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभानेवाली आदर्श लेखिका है। उनके परिवार में अपनापन, प्रेमपूर्ण संबंध, गहरे और आत्मीय संबंध, उन्नति और सुख जैसी जीवनमूल्यों की कामना दिखाई देती है जिसके कारण उनके संयुक्त परिवार के सामने एकल परिवार की अवधारणा में ढेर सारे दोष दृष्टिगोचर होते हैं।

अलका सरावगी जी संघर्षमयी स्थिति में अपनी पढ़ाई पूरी कर अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी-मुक्ति की आकांक्षा रखती हैं। नौकरी के क्षेत्र में असफल होनेवाली अलका अपनी सृजन-प्रक्रिया के जरिए समकालीन लेखकों में अपनी अलग पहचान बनाती हैं। उन्होंने पारिवारिक दायित्व को निभाते हुए अपनी उच्च-शिक्षा हासिल की है। वह अपनी रचनाओं के प्रति निष्ठावान रहकर पाठकों को सही दिशानिर्देश का संकेत भी देती हैं और पाठकों को सोच-विचार तथा चिंतन-मनन करने के लिए बाध्य करती हैं।

ईश्वर के प्रति आस्था रखनेवाली अलका गांधीवादी विचारों से प्रभावित है। पत्रकारिता को समाज की विषमता से जूझने का हथियार समझकर उन्होंने पत्रकारिता क्षेत्र में भी अपनी कलम चलाई है। उन्होंने अपने कृतित्व के माध्यम से समाज की अनेक समस्याओं को चित्रित किया है और उन समस्याओं को सुलझाने के लिए 'बाइपास' का मार्ग अपनाने का उपाय भी बताया है।

अलका जी का जीवन, सृजन और चिंतन इन तीनों को जानने के पश्चात् यह परिलक्षित होता है कि बचपन से ही साहित्य के प्रति रूचि रखनेवाली अलका जी को अपने माता-पिता से भाषा-संस्कार मिले थे। अलका जी का साहित्य-सृजन उनके चिंतन-मनन के अनुरूप है। उनका चिंतन अधिक सच्चा, कालसापेक्ष और विचारधाराओं से युक्त दृष्टिगोचर होता है। अशोक सेकसरिया जैसे महान आदमी से प्रेरणा लेकर साहित्य अध्ययन और सृजन को बरकरार रखते हुए अलका जी ने कुछ महत्त्वपूर्ण रचनाओं का निर्माण किया है जिसके कारण उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया है।

निष्कर्षत: कहना सही होगा कि उनका जीवन फलक तथा उनका व्यक्तित्व उनके साहित्य को समझने में तथा उचित मूल्यांकन करने में सहायक सिद्‌ध होता है। कहा जा सकता है कि अलका सरावगी का व्यक्तित्व एवं वाङ्मय बहुआयामी है। साथ ही समाज के लिए आदर्श तो है ही लेकिन प्रेरणादायी भी है इसमें संदेह नहीं।

उपन्यास कला और अलका सरावगी के उपन्यास : स्वरूपगत विवेचन :

अलका सरावगी के उपन्यासों का स्वरूपगत विवेचन करने के पश्चात् कहा जा सकता है कि उपन्यास के स्वरूप की दृष्टि से ये उपन्यास पारंपरिक ढाँचे को तोड़नेवाले हैं। लेखिका ने स्वयंभू 'फार्म' अपनाने के कारण ये उपन्यास 'फार्म' की दृष्टि से आधुनिक, प्रयोगात्मक तथा कलात्मक परिलक्षित होते हैं। उपन्यास के तत्वों की दृष्टि से विवेच्य उपन्यास पारंपरिक ढाँचे को तोड़ते हैं। लेखिका ने अपने उपन्यासों में तत्व की दृष्टि से एक नया प्रयोग किया है। कथावस्तु में बिखराव, पात्रों की भरमार, लंबे-लंबे संवादों की योजना होने के बावजूद भी कुछ समकालीन घटना, परिवेश तथा प्रसंगों के कारण विवेच्य उपन्यास प्रासंगिक परिलक्षित होते हैं।

देशकाल वातावरण, भाषा-शैली और उद्‌देश्य आदि तत्वों का उचित निर्वाह विवेच्य उपन्यासों में दृष्टिगत होता है। देशकाल वातावरण में सामाजिक, ऐतिहासिक, महानगरीय, आर्थिक तथा राजनीतिक वातावरण का चित्रण कलात्मकता से अंकित है। विवेच्य उपन्यासों में भाषा तथा शैली के नए-नए प्रयोग दृष्टिगोचर होते हैं। विवेच्य उपन्यासों के उद्‌देश्य तत्व में वैविध्य नजर आता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि लेखिका ने आदर्श तथा नैतिक मूल्यों की स्थापना कर, युगीन व्यापक संदर्भों को रूपायित कर मानव-चेतना जगाने का प्रयास किया है जिसके कारण विवेच्य उपन्यास कलात्मक प्रतीत होते हैं। औपन्यासिक तत्वों की दृष्टि से विवेच्य उपन्यास नये-नये प्रयोग के बावजूद भी कलात्मक है इसमें संदेह नहीं।

उपन्यास प्रकार के दृष्टि से अलका सरावगी के उपन्यास सामाजिक उपन्यासों की कोटि में आते हैं। विवेच्य उपन्यास समाज में व्याप्त विसंगतियाँ, कुरीतियाँ तथा रूढ़ि-परंपराओं का पर्दाफाश कर समाज परिवर्तन का दृढ़तापूर्वक समर्थन करते हैं। अंत में कहना सही होगा कि औपन्यासिक शिल्प की दृष्टि से अलका सरावगी के उपन्यास कलात्मक हैं इसमें दो राय नहीं।

अलका सरावगी के उपन्यास : विषयवस्तु की कलात्मकता का मूल्यांकन :

अलका सरावगी के उपन्यासों की विषयवस्तु का कलात्मक मूल्यांकन करने के उपरांत कहा जा सकता है कि 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास का आरंभ वर्णनात्मक, कौतुहलवर्धक, रोचक तथा जिज्ञासा उत्पन्न कर स्थान का भी जिक्र कराता है। विषय-वस्तु के विकास में किशोरबाबू जिस प्रकार अपने जीवन में आई हुई बीमारी या समस्याओं को बाइपास करके सुविधाजनक रास्ते या बगल के रास्ते से आगे निकल जाते हैं उसी प्रकार हर मनुष्य ने अपने जीवन में आई हुई समस्या से बाइपास कर आगे निकल जाना चाहिए यह संदेश मिलता है । साथ ही आजादी के पहले और बाद का लेखा-जोखा तथा मारवाड़ी समाज का चित्रण विषय-वस्तु के विकास को कलात्मक बना देता है। बावजूद इसके कि उपन्यास में अनेक विषय मौजूद हैं जो आज भी प्रासंगिक हैं। विषयवस्तु के संघर्ष में किशोरबाबू अपने जीवन जीने के लिए या बीमारी से छुटकारा पाने के लिए संघर्ष करते हुए परिलक्षित होते हैं। इसके अलावा कुछ पुरूष तथा नारी पात्र भी संघर्ष करते हैं। उपन्यास की चरमसीमा में आजादी की 50 वीं वर्षगाँठ का चित्रण मिलता है। साथ ही किशोरबाबू की बाइपास सर्जरी होना तथा तीनों मित्रों का अर्थात् किशोरबाबू, अमोलक तथा शांतनु का अपनी जिंदगी में आई हुई समस्याओं को बाइपास करते हुए किए गए कौल

के मुताबिक मिलना उपन्यास की चरमस्थिति का ही दूयोतक है। उपन्यास का अंत फिल्मी ढंग का तथा प्रतीकात्मक तो है ही साथ ही लेखिका ने गांधीवादी विचारों को दोहराकर स्वदेश प्रेम जगाकर एक आदर्श समाज की कामना की है। अंतत: कहना सही होगा कि प्रस्तुत उपन्यास का आरंभ, विकास, संघर्ष, चरमसीमा और अंत उपन्यास की कलात्मकता का एक नया प्रयोग है इसमें संदेह नहीं।

'शेष कादम्बरी' उपन्यास का आरंभ आत्मकथात्मक शैली में हुआ है। उपन्यास के विकास में कादम्बरी ढूँढ़ने की प्रचेष्टा होने के कारण 'शेष कादम्बरी' एक ऐसी औपन्यासिक कृति है, जिसमें जीवन और उपन्यास गड्ड-मड्ड हो जाते हैं। कादम्बरी शायद अपने खिलंदड अंदाज में नानी के कहानी के बारे में कह सकती है कि 'जीवन ही क्या, जिसमें उपन्यास न हो और वह उपन्यास ही क्या जिसमें जीवन न हो'। रूबी दी सविता का कल्याण करना चाहती है लेकिन उनका यह कदम फिर एक बार आदमी और आदमी के बीच खड़ी दीवारों तक लाकर छोड़ देता है। प्रस्तुत उपन्यास के विषय के माध्यम से लेखिका ने रूबी दी की पीड़ा, दु:ख तथा दयनीय जीवन का चित्रण कर अलका जी ने नारी-मुक्ति की पुरजोर हिमायत की है। साथ ही पारिवारिक तथा सामाजिक हिंसा की शिकार हुई युवतियों की उलझनों को सुलझाना, उन्हें अकेलापन तथा आत्महत्या जैसी भयावह स्थितियों से दूर कर उनमें आत्मविश्वास जगाना, उपेक्षिता, उत्पीड़ित स्त्री को उसके अधिकार दिलाना, वेश्याओं को उसके अधिकार दिलवाना तथा पुरूष-वर्चस्व समाज की विसंगतियों का संकेत देना आदि बातें विषय विषयवस्तु के विकास में अंतर्निहित हैं जो कलात्मक प्रतीत होती है। संघर्ष तथा चरमसीमा उपन्यास में कहीं भी दिखाई नहीं देती। अंत में रूबी दी भारतीय नारी की उदारता का परिचय करा देती है। सार यह कि प्रस्तुत उपन्यास में संघर्ष तथा चरमसीमा की स्थिति न होने के बावजूद भी आरंभ, विकास और अंत आदि की दृष्टि से विषयवस्तु कलात्मक परिलक्षित होती है।

अलका सरावगी के 'कोई बात नहीं' उपन्यास का आरंभ कौतुहलवर्धक, रोचक और जिज्ञासा पैदा करता है। साथ ही प्रकृति चित्रण तथा स्थान का भी जिक्र कराता है। उपन्यास के विकास क्रम में लेखिका ने शशांक के माध्यम से जिद्दी बनकर हिम्मत न हारने का मंत्र दिया है। नारी-मुक्ति की कामना के साथ-साथ हिंसा और आतंक की बातें

सामाजिक स्वास्थ्य के लिए कितनी हानिकारक होती है यह बताने का लेखिका का महत् प्रयास रहा है। संघर्ष के माध्यम से यह सबक मिलता है कि जिस प्रकार शशांक अपने जीवन में आई हुई बीमारी से संघर्ष करता हुआ आगे बढ़ता है उसी प्रकार मनुष्य ने भी अपने जीवन में आई हुई कठिन परिस्थिति में हिम्मत न हारते हुए नए जीवन की शुरूआत की प्रेरणा देकर उपन्यास का अंत दिखाया है। सार यह कि 'कोई बात नहीं' उपन्यास का आरंभ, विकास, संघर्ष, चरमसीमा तथा अंत आदि का एक नया प्रयोग तो है ही साथ ही उसका कलात्मक अंकन भी है।

संक्षेप में कहना होगा कि विवेच्य उपन्यास विषयवस्तु की दृष्टि से कलात्मकता एक नया प्रयोग है इसमें संदेह नहीं।

अलका सरावगी के उपन्यास : चरित्र सृष्टि की कलात्मकता का मूल्यांकन :

अलका सरावगी के उपन्यासों की चरित्र-सृष्टि के अध्ययन के उपरांत जो तथ्य सामने आए हैं वे इस प्रकार हैं - अलका सरावगी के 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास का किशोरबाबू नायक है जो माँ से प्रेम करनेवाला, नेतृत्व-संपन्न, भविष्य के प्रति सजग, मेहनती, स्वाभिमानी, देशप्रेमी, जिज्ञासु, जिदूदी, डरपोक, मित्र, दिल का मरीज तथा दकियानूसी मानसिकता आदि गुणों से युक्त नजर आता है। गौण पात्र के रूप में अमोलक और शांतनु हैं। अमोलक गांधीवादी, अध्ययनशील, समाज सेवक अर्थात् सेवाभावी, दूरदृष्टि रखनेवाला और अहिंसावादी आदि विशेषताएँ उनके व्यक्तित्व में परिलक्षित होती हैं। शांतनु सुभाषबाबू का समर्थक, मेहनती, लालची, पूँजीपति तथा अंधविश्वास का विरोध करनेवाला है। अन्य पात्र अपनी अपनी विचारधाराएँ लेकर प्रकट होते हैं। पात्र संख्या की दृष्टि से भरमार होने के बावजूद भी कुछ पात्रों के माध्यम से लेखिका ने उपन्यास में कलात्मकता अंकित की है। पात्रों के चयन में समाज के हर वर्ग के पात्रों का चयन प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है। पात्र चरित्र-चित्रण में भी कलात्मकता है। उपन्यास में किशोरबाबू, अमोलक तथा शांतनु आदि प्रतीक पात्र हैं। अमोलक के माध्यम से लेखिका ने गांधीवादी विचारों को दोहराकर वर्तमान समय में गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता और उसके महत्त्व पर जोर दिया है। लेखिका ने यह संदेश दिया है कि अहिंसा

का मार्ग व्यक्ति को सही राह पर ले जानेवाला मार्ग है। शांतनु के माध्यम से लेखिका ने समाजसेवा के नाम पर अकूत धन कमानेवाले लालची तथा पूँजीपति लोगों की पोल खोल दी है। सार यह कि 'कलि-कथा : वाया बाइपास' उपन्यास चरित्र सृष्टि की दृष्टि से सफल तथा कलात्मक उपन्यास है।

अलका सरावगी के 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में चरित्र-सृष्टि का उचित निर्वाह हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका रूबी दी के व्यक्तित्व में समाज-सेविका, जिद्दी, सहनशील, प्रतिभाशाली, जिज्ञासु, अकेलापन, प्रेमिका तथा उदारता आदि विशेषताएँ उनके व्यक्तित्व में दृष्टिगोचर होती हैं। अनवरत अपने जीवन में कष्ट या दु:ख को भोगनेवाली तथा पिता, भाई और पति द्वारा प्रवंचित सविता अपने अधिकार तथा न्याय के लिए लड़नेवाली नारी है। रूबी दी की नातिन कादम्बरी समझदार, संवेदनशील, प्रतिभासंपन्न, घुमक्कड़, चिंतनशील तथा दूसरों का आदर करनेवाली आधुनिक विचारों की लड़की है। अन्य पात्र बीच बीच में आते हैं और प्रधान पात्र के चरित्र पर प्रकाश डालकर बीच में ही लुप्त हो जाते हैं। पात्र संख्या की दृष्टि से भरमार होते हुए भी कुछ नारी पात्रों द्वारा उपन्यास की कलात्मकता बनाई है। पात्र चयन में समाज की लेखिका ने हर वर्ग के ज्यादातर नारी पात्रों को चुना है। चरित्र-चित्रण में वैविध्य होने के कारण प्रस्तुत उपन्यास कलात्मक प्रतीत होता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि 'शेष कादम्बरी' उपन्यास चरित्र सृष्टि की दृष्टि से कलात्मक रचना है।

'कोई बात नहीं' उपन्यास का प्रधान पात्र शशांक उपन्यास का नायक अपाहिज, दूसरों की चिंता करनेवाला, स्वावलंबी बनने की छटपटाहट, जिद्दी, जिज्ञासु, अकेलापन, क्रोधी, मित्र तथा असाध्य बीमारियों का सामना करनेवाला है। गौण पात्रों में शशांक की माँ मिसेज चौधरी और शशांक का मित्र आर्थर का चरित्र महत्त्वपूर्ण है। मिसेज चौधरी हर वक्त अपने बेटे शशांक का खयाल रखनेवाली, ईश्वर के प्रति आस्थावान, जिद्दी, विद्रोही और हिम्मत न हारनेवाली नारी के रूप में दिखाई देती है। शशांक का एकमात्र दोस्त आर्थर, दुर्बल शरीर का, पढ़ाई में कमजोर, गेहुँए रंग का, हँसमुख स्वभाव का एंग्लो-इंडियन लड़का है। अन्य पात्रों का जिक्र प्रसंगवश और यथायोग्य मिलता है। पात्र संख्या, पात्र चयन तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से प्रस्तुत उपन्यास कलात्मक है।

लेखिका शशांक के माध्यम से मनुष्य जीवन की जिजीविषा प्रकट करती है। शशांक का चरित्र नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी है।

कहा जा सकता है कि अलका सरावगी के उपन्यास चरित्र सृष्टि की दृष्टि से कलात्मकता की कसौटी पर सही रूप में उतरते हैं।

अलका सरावगी के उपन्यास : देशकाल वातावरण सृष्टि की कलात्मकता का मूल्यांकन

अलका सरावगी के उपन्यासों में देशकाल वातावरण सृष्टि की कलात्मकता का मूल्यांकन करने के उपरांत जो निष्कर्ष सामने आए हैं, वे इस प्रकार हैं - अलका सरावगी के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक वातावरण में बीसवीं शताब्दी, सन् 1992 तथा आजादी के पूर्ववर्ती काल का चित्रण कलात्मक से परिलक्षित होता है। उनके उपन्यासों में कलकत्ते के कालीघाट, आदिगंगा पुल, अलिपुर, अरविंद आश्रम, थिएटर रोड़, बहूबाजार का रेडलाईट एरिया, धर्मतल्ला, न्यू मार्केट तथा नार्थ कलकत्ता आदि स्थानों का चित्रण सजीवता तथा कलात्मकता से रेखांकित किया है। सती-प्रथा, बलि-प्रथा, दहेज-प्रथा, अंधविश्वास, पूजापाठ आदि प्रथाओं का पर्दाफाश करना सामाजिक वातावरण का महत्त्वपूर्ण उद्‌देश्य रहा है। विवेच्य उपन्यासों में मारवाड़ी समाज का खान-पान, शादी-ब्याह, वेशभूषा, रीति-रिवाज तथा रहन-सहन तथा 'एंग्लो-इंडियन' लोगों की स्थिति का भी चित्रण किया है।

अलका सरावगी के उपन्यासों में ऐतिहासिक वातावरण के अंतर्गत जर्मन, सिंगापुर, पाकिस्तान, मिर्जापुर, फरूखाबाद, चीन तथा मालवा आदि स्थानों के साथ-साथ कलकत्ता शहर में होनेवाले बालीगंज, डलहौसी स्वायर, बड़ा बाजार की लाइब्रेरी, पुराना हाई कोर्ट, सेंट जॉन चर्च, गवर्मेंट हाऊस, राइटर्स बिल्डिंग और इंडियन म्युजियम आदि स्थानों का सजीव अंकन कलात्मकता के साथ किया है। विवेच्य उपन्यासों के ऐतिहासिक वातावरण में सन् 23 जून, 1757, सन् 1830 , सन् 1850, सन् 1942 तथा सन् 1965, गांधी तथा नेहरू जी के समय का, उन्नीसवीं शताब्दी के शुरुआती समय का चित्रण कलात्मकता से अंकित मिलता है। सत्ता प्राप्ति की होड़, पदलोलुपता, धोखाधड़ी, नफरत, तानाकशी वृत्ति आदि बातों का पर्दाफाश विवेच्य उपन्यासों के

ऐतिहासिक वातावरण में किया है। साथ ही अफीम तथा प्लेग के डर के कारण कलकत्ते का 'सिटी ऑफ पॅलेसेस' बनना, गांधी तथा नेहरू को गिरफ्तार किए जाना, मिश्रित खून के लोगों की हिंदुस्तानियों के प्रति नफरत, युद्ध के समय के माहौल का चित्रण, हिटलर की बुरी प्रवृत्ति का चित्रण और युद्ध के कारण लोगों की हुई दयनीय दशा आदि ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण विवेच्य उपन्यासों में कलात्मकता से लक्षित होता है।

अलका सरावगी के उपन्यासों में 18 शताब्दी तथा सन् 1941 के काल के साथ-साथ फर्रूखाबाद, कानपुर, मुर्शिदाबाद, रजपूताना, जपान, अमेरिका, इंग्लैंड तथा कलकत्ते के फोर्ट विलियम, विक्टोरिया मैदान, बेलिस का पुल, ताज बंगाल होटल, आदिगंगा का पुल, चिड़ियाखाना, नेशनल लाइब्रेरी, हार्टीकल्चर गार्डन, मल्टीस्टोरीड बिल्डिंग, भव्य महलनुमा मकाने, भवानीपुर, बड़ाबाजार, पार्क सर्कस, इन्टाली तथा टैंगस आदि स्थानों का चित्रण महानगरीय वातावरण का दस्तावेज देता है। महानगरों में होनेवाली टूटन, बिखराव, परिवर्तन, आतंक, मल्टिस्टोरिड मकानों के बढ़ने के कारण फ्लैटों की जिंदगी में फैलनेवाली गंदगी, आवास तथा झूठापन तथा महानगरों में होनेवाला काला शहर तथा गोरा शहर भेदभाव, महानगरों के हर इलाके के लड़कों का आपसी व्यवहार आदि बातों का चित्रण महानगर की नारकीय जिंदगी को प्रस्तुत करता है।

आर्थिक वातावरण में चीन, छपनिया, भारत में होनेवाले बंगाल प्रांत आदि के चित्रण के साथ-साथ सन् 1832, सन् 1909, छपनियों के अकाल के समय का तथा अंग्रेजों का भारत पर राज था उसी समय का वातावरण विवेच्य उपन्यासों में कलात्मकता के साथ अंकित है। अर्थ के कारण लोगों का किंग मेकर बनना, मनचाहा व्यवहार करना, सत्ता को अपने हाथ का खिलौना बनाना, पैसे के बूते पर शादी-ब्याह का होना, पैसों के कारण आत्महत्या करना, बच्चों को बेचना, सरकार का सूद पर कर्ज लेना और पिछला कर्ज चुकाने के लिए फिर कर्ज लेना निश्चय ही देश को विनाश की ओर ले जाने का संकेत है। साथ ही शेयर मार्केट में लोगों का लाखों रूपये कमाना, अंग्रेजों का अफीम के व्यापार में दोनों तरफ से मुनाफा खाना, आदि बातें विवेच्य उपन्यासों के आर्थिक वातावरण के अंतर्गत आती हैं जो देश के भविष्य या आनेवाले कल के बारे में सजग तथा सचेत कराती है।

'कलि-कथा : वाया बाइपास' तथा 'शेष कादम्बरी' उपन्यास में राजनीतिक वातावरण का चित्रण पर्याप्त मात्रा में मिलता है। लेकिन 'कोई बात नहीं' उपन्यास में राजनीतिक वातावरण का अभाव दृष्टिगोचर होता है। राजनीतिक वातावरण में सन् 1923, सन् 1924, सन् 1927, 1945, सन् 1963 से 1967 आदि समय के साथ साथ उत्तर प्रदेश के चन्दौली तथा कलकत्ते के विभिन्न भागों का चित्रण कलात्मक परिलक्षित होता है। नेताओं की स्वार्थांधता, दलबदलू वृत्ति, नाम बदलकर चुनाव लड़नेवाले लोगों की वृत्ति, हमारे सरकार की अंग्रेजों से बदतर व्यवहार करने की वृत्ति, लोकतंत्र के अंदर फैले राजतंत्र का पर्दाफाश करना, राजनीति में पुरानी पीढ़ी का स्वीकार, नए पीढ़ी का अस्वीकार एवं संसद में चलनेवाली बहस आदि बातों का चित्रण 'कलि-कथा : वाया बाइपास' तथा 'शेष कादम्बरी' उपन्यासों में दृष्टिगत होता है जो राजनीतिक वातावरण की पहल कराता है। अंतत: कहना सही होगा कि विवेच्य उपन्यासों में देशकाल वातावरण की सृष्टि का चित्रण कलात्मक के साथ परिलक्षित होता है ।

अलका सरावगी के उपन्यास : भाषाशैली एवं उद्देश्य-सृष्टि की कलात्मकता का मूल्यांकन :

अलका सरावगी के उपन्यासों की भाषाशैली एवं उद्देश्य सृष्टि का कलात्मक मूल्यांकन करने के उपरांत जो तथ्य सामने आए हैं, वे इस प्रकार हैं - अलका सरावगी के उपन्यासों में संस्कृत, अंग्रेजी, अरबी तथा फारसी शब्दों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में मिलता है। जिसके कारण विवेच्य उपन्यासों की भाषा स्वाभाविक, सरल, सहज, सशक्त, सफल तथा कलात्मक परिलक्षित होती है। भाषा के विविध प्रयोग विवेच्य उपन्यासों में दृष्टिगत होते हैं। कहावतें, मुहावरे, लोकगीत, गालियाँ, प्रतीकात्मकता तथा साहित्यिक काव्यपंक्तियों का प्रयोग पात्रानुकूल, परिवेशानुकूल तथा यथार्थसंगत किया है, जिसके कारण अलका सरावगी के उपन्यासों में प्रभावात्मकता तथा कलात्मकता दृष्टिगत होती है।

पूर्वदीप्ति, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक, डायरी, स्वप्न, टेलीफोन, किस्सागोई और कुरियर आदि शैलियों का प्रयोग शैलिगत वैविध्य के साथ-साथ कलात्मकता को अंकित करता है। लेखिका ने भाषाशैली का यथास्थान, यथावश्यक तथा यथायोग्य

प्रयोग कर भाषा पर अपना अधिकार दिखा दिया है। उनकी भाषा में कलापक्ष का सामर्थ्य तथा अनुभवों का संप्रेषण भी परिलक्षित होता है। विवेच्य उपन्यासों में प्राप्त शैलियाँ पाठकों को संबंधित विषय पर विचार करने के लिए बाध्य करती है। विवेच्य उपन्यासों के शैली में प्राप्त शैलीगत वैविध्य लेखिका की अभिव्यक्ति क्षमता का परिचायक है। अत: कहना सही होगा कि अलका सरावगी के उपन्यासों की भाषा शैली की सभी विशेषताएँ समृद्ध तथा विस्तृत ज्ञान का परिचायक तो है ही, लेकिन कलात्मक भी है इसमें संदेह नहीं।

अलका सरावगी के उपन्यासों में मारवाड़ी समाज का चित्रण, आजादी के पूर्ववर्ती तथा परवर्ती काल की स्थिति-गति चित्रित कर दिशा-निर्देश का भी संकेत दिया है। लेखिका का जीवन में आई समस्या को सुलझाने के लिए 'बाइपास'का मार्ग अपनाने का संदेश देना औपन्यासिक कलात्मकता का परिचायक है। नारी की पीड़ा, दर्द, व्यथा, दु:ख, त्रासदी को चित्रित कर उनको अकेलापन तथा आत्महत्या जैसी भयावह स्थितियों से दूर कर उनमें आत्मविश्वास जगाकर अन्याय-अत्याचार का विरोध कर लेखिका ने नारी-मुक्ति की पुरजोर हिमायत की है जो विवेच्य उपन्यासों का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य रहा है। साथ ही ये उपन्यास जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं, स्वदेश प्रेम जगाते हैं और अनेक प्रधान तथा गौण उद्देश्यों की पूर्ति भी कराते हैं।

अंतत: कहना सही होगा कि विवेच्य उपन्यासों की भाषा शैली तथा उद्देश्य, कलात्मकता के परिचायक तो है ही, अपितु पथ-भ्रष्ट पाठक एवं युवापीढ़ी को पथ-दर्शक तथा प्रेरणादायी भी सिद्ध होते हैं इसमें दो राय नहीं।

❊ उपलब्धियाँ :

'अलका सरावगी की उपन्यास कला का मूल्यांकन' करने के पश्चात् जो उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं वे सार रूप में इस प्रकार हैं -

1. अलका सरावगी की औपन्यासिक कला हिंदी साहित्य में अपनी एक अलग पहचान रखती है।
2. अलका सरावगी के उपन्यासों में अन्य समाज की तुलना में मारवाड़ी समाज का चित्रण अधिक मात्रा में उपलब्ध है। हिंदू तथा मुस्लिम समाज का चित्रण भी उनके

उपन्यासों में मिलता है। साथ ही एंग्लो इंडियन समाज तथा अन्य समाज का चित्रण भी मिलता है। समाज का चित्रण करते समय उसमें व्याप्त विसंगतियों का पर्दाफाश कर सही दिशा देने का काम ये उपन्यास करते हैं।

3. अलका सरावगी के उपन्यासों का स्वरूपगत विवेचन करने के पश्चात् पता चलता है कि ये उपन्यास लीक से हटकर तथा पारंपरिक ढाँचे को तोड़नेवाले हैं। विवेच्य उपन्यासों की यह एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि माननी होगी।

4. विवेच्य उपन्यास समाज में व्याप्त विसंगतियाँ, कुरीतियाँ तथा रूढ़ि-परंपरा का पर्दाफाश कर समाज परिवर्तन का दृढ़तापूर्वक समर्थन करते हैं।

5. नारी की पीड़ा, दर्द तथा दु:ख आदि का चित्रण करना तथा नारी को अकेलापन, आत्महत्या आदि भयावह समस्याओं से दूर कर स्त्रियों में आत्मविश्वास जगाना, उपेक्षिता, उत्पीड़ित स्त्रियों को उनके अधिकार दिलवाना, पितृसत्तात्मक समाज से मुक्ति पाना और अपने अधिकार की पुरजोर हिमायत करना विवेच्य उपन्यासों के अध्ययन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि माननी होगी।

6. आजादी के पूर्ववर्ती तथा परवर्ती काल का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना, समाज के कटु यथार्थ को उजागर करना और पथभ्रष्ट समाज के लिए सही राह दिखाना विवेच्य उपन्यासों का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य रहा है।

7. सत्ता प्राप्ति की होड़, पदलोलुपता, धोखाधड़ी, नफरत, तानाकशी वृत्ति आदि बातों के माध्यम से ऐतिहासिक पर्तों को उजागर करना अलका सरावगी के उपन्यासों का महत् प्रयास रहा है।

8. बढ़ती आबादी, टूटन, बिखराव, परिवर्तन, आतंक, भेदाभेद, आवास, युद्ध का माहौल, झूठापन तथा गंदगी को चित्रित कर महानगर की नारकीय जिंदगी को चित्रित करना विवेच्य उपन्यासों की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

✻ अध्ययन की नई दिशाएँ :

अलका सरावगी के साहित्य पर निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है -

1. ''अलका सरावगी के उपन्यासों में चित्रित नारी-विमर्श''
2. ''अलका सरावगी के उपन्यासों में चित्रित मारवाड़ी समाज जीवन''
3. ''अलका सरावगी के उपन्यास : सामाजिक यथार्थ''

वस्तुत: हर शोध-विषय की अपनी सीमा होती है। मेरा शोधकार्य भी अपनी सीमा में रहकर संपन्न हुआ है। आनेवाले समय में उपर्युक्त विषयों पर स्वतंत्र रूप से शोध-कार्य हो सकता है।

✻ ✻ ✻ ✻